Hanuman Chalisa In Sanskrit PDF

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि ।

बरनऊँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौं पवनकुमार ।

बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं
हरहु कलेस बिकार ॥

HANUMAN CHALISA

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥१

राम दूत अतुलित बल धामा
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ॥२

महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥३

कंचन बरन बिराज सुबेसा ।
कानन कुंडल कुंचित केसा ॥४

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥५

संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ॥६

विद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ॥७

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लखन सीता मन बसिया ॥८

सूक्श्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥९

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र के काज सँवारे ॥१०

लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥११

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥१२

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥१३

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ॥१४

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥१५

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥१६

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥१७

HANUMAN CHALISA

जुग सहस्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥१८

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥१९

दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥२०

राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥२१

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ॥२२

आपन तेज संहारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥२३

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ॥२४

नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥२५

संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥२६

सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ॥२७

और मनोरथ जो कोई लावै ।
सोई अमित जीवन फल पावै ॥२८

चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥२९

HANUMAN CHALISA

साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥३०

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ॥३१

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥३२

तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥३३

अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥३४

और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेई सर्ब सुख करई ॥३५

संकट कटै मिटै सब पीरा ॥
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥३६

जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥३७

जो सत बार पाठ कर कोई ।
छूटहि बंदि महा सुख होई ॥३८

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥३९

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥४०

दोहा

पवनतनय संकट हरन
मंगल मूरति रूप ।

HANUMAN CHALISA

राम लखन सीता सहित
हृदय बसहु सुर भूप ॥

सियावर रामचंद्रजी की जय ॥

Hanumanchalisa.co.in

HANUMAN
CHALISA